Sixteenth Loksabha

an>

Title: Madam Speaker made a reference and placed a Resolution before the House on the passing away of Shri Atal Bihari Vajpayee, former Prime Minister (Resolution Adopted unanimously).

माननीय अध्यक्ष :सर्वप्रथम, मैं हमारे पूर्व प्रधान मंत्री माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी के लिए सभा के सम्मुख एक शोक प्रस्ताव रखना चाहूंगी।

पत्रकारिता से प्रधान मंत्री पद तक का सफर करने वाले माननीय अटलजी का जन्म 25 दिसम्बर 1924 को ग्वालियर में हुआ था। वे उत्तर प्रदेश के बलरामपुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से दूसरी तथा चौथी लोक सभा, मध्य प्रदेश के ग्वालियर संसदीय निर्वाचन-क्षेत्र से पांचवीं लोक सभा, नई दिल्ली संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से छठी और सातवीं लोक सभा और लखनऊ संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से दसवीं से चौदहवीं लोक सभा के सदस्य रहे। वे दो बार राज्य सभा के सदस्य भी रहे। श्री अटलजी हमारी संसद के महानतम सदस्यों में से एक थे।

श्री वाजपेयी जी वर्ष 1977 से 1979 तक भारत के विदेश मंत्री रहे। वे लोक सभा में वर्ष 1993 से 1996 एवं वर्ष 1996 से 1997 तक विपक्ष के नेता रहे। वर्ष 1977 में संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी में भाषण देने वाले वे पहले व्यक्ति बने।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी तीन कार्यकाल के लिए भारत के प्रधान मंत्री रहे। उनका पहला कार्यकाल वर्ष 1996 में, दूसरा वर्ष 1998 से 1999 तक और तीसरा कार्यकाल वर्ष 1999 से 2004 तक रहा।

श्री वाजपेयी जी को वर्ष 1992 में 'पद्म विभूषण' सम्मान प्रदान किया गया। वर्ष 1994 में उन्हें भारतीय संसदीय समूह (IPG) द्वारा स्थापित 'उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार' प्राप्त हुआ। वर्ष 2015 में श्री वाजपेयी जी को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति के एक शिखर पुरुष एवं भारतीय लोकतंत्र के मूर्तिमंत स्वरूप थे। उनमें सागर-सी गहराई, हिमालय-सी भव्यता, सूर्य जैसी प्रखरता, चांद जैसी शीतलता, आकाश जैसा ऊंचा

नेतृत्व, पिता जैसा दायित्व एवं करोड़ों जनमानस के हृदय को छूने वाला व्यक्तित्व था। विपक्ष के नेता के तौर पर उनकी तथ्यात्मक आलोचनाओं में ऐसी मधुरता, गरिमा और मर्यादा होती थी कि पक्ष-विपक्ष, दोनों उन्हें मंत्रमुग्ध हो कर सुना करते। राष्ट्रहित को हमेशा सर्वोपरि मानते हुए वे संसद में धारदार व अकाट्य तर्कों के माध्यम से, अपनी बात बिना किसी कटुता के, जोरदार तरीके से रखकर सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित किया करते थे। प्रधान मंत्री के तौर पर उनके उदारमना कर्मठ व्यक्तित्व ने भी सबको उतना ही प्रभावित किया है।

अटलजी वक्ताओं के भी वक्ता थे। उनके विचारों के समर्थक एवं आलोचक, दोनों ही समान रूप से कहते थे कि अटलजी जैसे व्यक्तित्व का कोई सानी नहीं है। अपने इन गुणों के कारण ही वे राजनीति के क्षेत्र में रहते हुए भी सर्वमान्य बने रहे। भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति के आभामंडल पर उनका दीर्घकालीन प्रभाव है और हमेशा रहेगा। भारत के लोकतंत्र के मर्म, वास्तविक चरित्र और अनुशासन को वे भली-भांति समझते थे।

अटलजी एक ऐसे तपस्वी थे जो आजीवन राग-द्वेष, लाभ-हानि से दूर राजनीति को मानव सेवा का साधन मानकर आगे बढ़ते रहे। अटलजी स्वच्छ राजनीति का ध्रुवतारा थे। एक कुशल राजनेता, कूटनीतिज्ञ एवं जननायक के रूप में अटलजी ने न केवल देश बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सम्मान अर्जित किया एवं अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी।

उनके नेतृत्व में राष्ट्र ने महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ अर्जित कीं। इनमें पोखरण में परमाणु परीक्षण, कारगिल युद्ध में विजय, स्वर्णिम चतुर्भुज राजमार्ग परियोजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, टेलीकॉम और आईटी सेक्टर में अभूतपूर्व विकास विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

श्री वाजपेयी जी के आकर्षक व्यक्तित्व का चुम्बकीय प्रभाव भारत के जनमानस पर था। जब वे संसद, सभा, गोष्ठियों एवं सम्मेलनों में भाषण दिया करते थे तो श्रोतागण मंत्रमुग्ध होकर उन्हें सुनते थे और प्रभावित होते थे। उनके विचार, वक्तव्य, कथन एवं कविता सीधे हृदय से उद्गारित होते थे। एक राजनीतिज्ञ के रूप में सिद्धांतों पर आधारित राजनीति, साहसिक निर्णय क्षमता, दूरदृष्टि, सौम्य व्यवहार एवं हास-परिहास उनकी विशिष्ट पहचान थी। उन्होंने अपने उत्कृष्ट आचरण, शुचिता और सद्व्यवहार के उच्चतम मानक स्थापित किए। बहुत ही हाजिर-जवाबी एवं साफगोई से सच्ची बात वे बड़ी सरलता से कह देते थे।

उनकी कविताओं और लेखों में उनकी संवदेनशीलता, मर्म, देशभक्ति, लोकतंत्र के प्रति उनकी अडिग आस्था और उनकी प्रगतिशील सोच झलकती है। श्री वापजेयी ने 'मृत्यु या हत्या', 'अमर बलिदान', 'कैदी कविराय की कुण्डलियाँ', 'न्यू डायमेन्शन्स ऑफ इंडियाज फॉरेन पॉलिसी' और 'मेरी इक्यावन कविताएँ' सहित कई पुस्तकें

लिखीं। अटलजी ने "राष्ट्रधर्म", 'पांचजन्य', 'वीर अर्जुन' और स्वदेश आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी का निधन 16 अगस्त, 2018 को 93 वर्ष की आयु में नई दिल्ली में हुआ। उनके निधन से देश को अपूरणीय क्षति हुई और देश ने बहुमुखी एवं बहुआयामी व्यक्तित्व का धनी एक महान जननायक खो दिया। उनके महाप्रयाण से भारत की राजनीति के एक युग का पटाक्षेप हो गया है। उनका व्यक्तित्व हम सभी के लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है और रहेगा। आज उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहना चाहूँगी-

"आज एक जननायक 'अनंत' है,

एक प्रखर वक्ता 'नि:शब्द' है

एक ओजस्वी कवि 'स्मृतियों' में है,

एक युग का सफर 'चित्रों' में है

काल के कपाल पर अमिट छाप छोड़ने वाले

अटल जी अमर हैं-

मां भारती के कण-कण में,

देश के जन-जन में, हर-मन में।"

"यह सभा पूर्व प्रधान मंत्री और भारत के एक महान सपूत माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी के महाप्रयाण पर गहरा शोक व्यक्त करती है और उनके परिवारजनों, प्रशंसकों और साथियों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करती है।

अटल जी के आदर्श एवं सिद्धान्त जन-जन की प्रेरणा का स्रोत बनकर हम सभी का मार्गदर्शन करते रहेंगे।"

यदि आप सबकी सहमति हो, तो इस प्रस्ताव को अनुमोदित माना जाए। सभा की इस भावना को संदेश के रूप में माननीय अटल जी के परिवार को प्रेषित किया जाएगा।

अनेक माननीय सदस्य : हाँ।

The Resolution was adopted unanimously.